सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | नवंबर-दिसंबर, 2014

हमारे लिए जन्मा बालक

क्रिसमस का सुसमाचार

'क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जायेगा, और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला , पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता , और शान्ति का राजकुमार रखा जायेगा।' यशायाह 9:6

एक बालक हमारे लिए उत्पन्न हुआ है। हमारे चारों ओर सारी प्रकृति , ऊपर रहनेवाले स्वर्गदूत और परमेश्वर के संत जो उन्हें जानते है , वे एक पुत्र की आस लगाए थे। जब एक राज्य एक बालक का राजकीय परिवार में जन्म लेने का इंतजार कर रहा था, तो पूरा राज्य आनंद और विजय की आत्मा से भरा था क्योंकि एक प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी उत्पन्न हुआ

हमारे लिए एक बालक ... पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

Star Utsav

चैनल पर

हर **रविवार सुबह 7:30 से 8:00** बजे

मरियम ने कहा , 'देख मैं तो प्रभु की दासी हूँ। तेरे वचन के अनुसार ही मेरे साथ हो। (लूका 1:38)

क्रिसमस की वह पहली खबर मरियम के पास आयी। उस सुसमाचार ने यीशु की माँ, मरियम को आश्चर्य से विस्मित कर दिया। एक महान मुक्तिदाता आने वाला है जिस के आगमन की पवित्र वचन में नबुवत है। मरियम निश्चित रूप से उस प्रतिज्ञा के बारे में जानती थी कि वह छुड़ाने वाला, एक कुँवारी से जन्म लेगा। अपने आप को पूरी तरह से भूल कर , पवित्रता के सौंदर्य में , मरियम यकीन नहीं कर पायी कि वह परमेश्वर के पुत्र की माँ बननेवाली है। परमेश्वर की इस बात पर विश्वास करना मरियम को असंभव लगा कि युगों मे वही परमेश्वर की चुनी पात्र है।

उस खबर लानेवाले स्वर्ग दूत से बड़ी सरलता और ईमानदारी से पूछा, 'यह कैसे हो सकता है , क्यों कि मैं तो कुंवारी ही हूँ?' ऐसा नहीं कि उसने परमेश्वर की बात पर भरोसा नहीं किया। मगर एक पल के लिए मानो परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसकी नज़र से ओझल हो गयी। मरियम उस वरदान को भूल गयी कि यीशु एक कुंवारी को जन्म लेगा। एक पल के लिए स्वाभाविक तर्क उसने अपने मन में आने दिया।

पवित्रता से निखरा सौंदर्य, स्थायी सुन्दरता है। आजकल की सारी प्रसाधन सामग्री और बाह्य रूप उपचारों के बावजूद, लगभग सभी सौंदर्य रानियों की सुन्दरता की अवधि बहुत कम समय की रहती है। कितनी जल्दी उसकी सम्मोहकता गायब हो जाती है ! मगर एक निर्मल मन वाली स्त्री और एक प्रार्थना करने वाली माँ , उनका सौंदर्य उमर के साथ बढ़ता है। उनके सफेद-बाल भी देखने में मनोहर लगते है।

मगर एक अशुद्ध अन्तरात्मा की यातना, हिम्मतवालों को भी चूर-चूर कर सकती है। और तुम्हारे मुँह पर झुर्री और शिकन उभरकर, तुम्हारी सुन्दरता को घृणित और नफरत करने लायक बना सकती है।

इसलिए आजकल कई जवान अपनी असली उम्र से भी कई साल बड़ी उम्र के लगते हैं।

जब की स्वर्गदूत मरियम के पास आया , वो मानो नीले आसमाँ से आये वज्रपात की तरह था, जो उसके सामान्य जीवन-गति को हिलाकर अस्थिर करने वाला था। फिर भी आनन्द भरी प्रत्याशा और समर्पण से उसने समाचार को स्वीकार किया। कालातीत शब्दों में उसने कहा , 'देख, मैं तो प्रभु की दासी हूँ।'

क्रिसमस एक बागी पापी के प्रति परमेश्वर के प्रेम की एक खूबसूरत कहानी है। क्रिसमस स्वर्ग से एक सांस की तरह हमारे पास आता है। सालाना फ़जूल खरीदारी, बेटोक शराब पीना और पेटू की तरह खाना, यह सच्ची से क्रिसमस मनाना बिलकुल नहीं है।

क्रिसमस , सारी मानव जाति के लिए एक जोरदार याद दिलाने वाला समय है। क्रिसमस हमें याद दिलाता है कि हम केवल जिन्दगी के समुन्दर में दिशाहीन इधर-उधर बहते रहने के लिए नहीं बनाये गये है। तुम्हारे लिए आज एक उद्धारकर्ता जन्मा है। 'किसे उद्धारकर्ता की जरूरत है ? जो गुमराह है। जो आज इस ग्रह पर जी रहें है, हम से अधिक और कौन भटका होगा। आज हम अपने हाथों में ऐसे आत्म-संहार के शस्त्र लिये है, जो निश्चित रूप से एक हत्या कांड करेगा। ऐसा हत्या कांड कि न कोई पराजित या न कोई विजेता बचेगा।

क्रिसमस कथन का 'मूल', उद्धार कर्ता है। उनके बिना क्रिसमस का कोई अर्थ नहीं है। हो सकता है कि अतीत की उस मरियम की तरह हम भी जरा सी उलझन में हो। और हम सोच रहें हो कि इसका क्या मतलब होगा। क्या परमेश्वर मेरे लिए भी ऐसा आश्चर्यजनक कार्य़ करनेवाले है?

यह अविश्वसनीय लग रहा है, फिर भी आइये हम कहें , 'मुझे यकीन है , परमेश्वर मुझे धोखा नहीं देंगे। वह असंभव को भी मेरे लिए संभव करेंगे।'

हाँ , क्रिसमस कई असम्भव बातों को वास्तविक सच्चाईयों में बदलेगा। परमेश्वर के एक उद्धरकर्ता को भेजने की प्रतीज्ञा पूरी हुई ; हर एक जो उस पर विश्वास रखता है, पाप से एक महान छुटकारा देखने वाला है।

क्रिसमस, स्वयं परमेश्वर को देह-धारण कर हमारे पास लाता है। ऐसे कितने साधू है जो निराश हुए है कि उनकी परमेश्वर की तत्पर खोज, सब व्यर्थ हुई। - उन्हें ऐसा लगा कि वे कभी भी उस 'सनातन' से मिल नहीं पायेंगे। ओह, यीशु को देखना कितना मनोहर। देहधारण किया परमेश्वर , परमेश्वर की पवित्रता , पीड़ित लोगों के प्रति परमेश्वर की कोमल करुणा - यह सब शरीर और लहू में रूपधारण करके , हमारे सामने है। पत्थर या सोने में नहीं , मगर मांस और लहू में।

लो वह आये और सामने खड़े हुए - निर्मल सुन्दरता , अद्वीतीय, सिद्ध - वह सब कुछ जो परमेश्वर में होना चाहिए, है ! क्या तुम उन पर से अपनी नज़र हटा पाओगे ? नहीं , तुम्हारा सारा ध्यान उन पर लगेगा। वह तब तक तुम्हें भर देंगे , जब तक कि तुम पुकार न उठो - 'यीशु ही मेरे लिए सब कुछ है। उनके बिना में जीवित नहीं रह सकता। ' हाँ , सच्चा क्रिसमस यही है - यीशु का तुम्हारी जिन्दगी में आना।

- जोशुआ दानिएल।

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

हमारे लिए एक बालक ... पृष्ठ 1 से

था। नबी भी देख रहे थे कि समय पर विजयी होकर परमेश्वर का राज्य आ गया था। इब्री नबी कहता है 'प्रभुता उसके कांधे पर होगी' वह 'अद्भुत, युक्ति करनेवाला' होगा। सृष्टि यह अनुभव करेगी। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। जो बालक उत्पन्न होने वाला था वह पृथ्वी में किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति या किसी महान राजा से महान था। वह दूसरा आदम या जो पहले आदम की भांति धोखा नहीं खायेगा। जब यीशु पैदा हुआ , केवल स्वर्ग ने इस सबसे महान घटना को समझा जा सका था। प्रकृति इसे देख कर समझ रही थी और एक नया तारा आकाश में दिखाई दिया। और मजूसियों या ज्योतिषियों ने इसे समझा। नितान्त साधारण चारवाहों ने इसे समझा। पूरी सृष्टि इस महान घटना को देखने के लिए लालायित थी। 'क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर प्रसव -पीड़ा से अभी तक कराहती और तड़पती है।' (रोमियों 8:22) पाप न केवल मानवता पर प्रभाव डालता है पर प्रकृति पर भी इसका असर पड़ता है। जब पाप आता है , पृथ्वी पर कांटे उगने लगते हैं (उत्पति 3:18) पृथ्वी के सबसे पहले घर में ही हत्या हुई। एक जवान ने अपने ही भाई को मार डाला। एक जानवर जो मनुष्य से मित्रवत् व्यवहार करता है वह विद्वेषी नहीं होता है। मनुष्य का हृदय खतरनाक तौर पर दुष्ट होता है जिसमें विषैले विचार उत्पन्न होते हैं जो कल्पनाओं को बिलकुल बुरा बना देता है। प्रकृति मनुष्य की गुलाम है जो उसके लिए बहुत से कष्ट पैदा करता है। असमय वर्षा , बाढ़, तूफान, सूखा, फसलों का बर्बाद होना, भूकम्प और प्रकृति विपदा इत्यादि हैं।

संसार में राजा आया जो फिर से बनाएगा। वह शान्ति का राजकुमार है। कुछ खतरनाक शक्तियाँ हैं जो मानवाता को बर्बाद करती हैं। वे इस संसार में शान्ति और सुरक्षा को कायम रहने नहीं देती है। पर यह राजा इन सभी शक्तियों पर अधिकार रखता है। वह समुद्र पर अपना अधिकार रखता है। वह गरजते हुए समुद्र को शान्त हो जाने की आज्ञा देता है। हवा और जल भी उसकी आज्ञा मानते हैं। शिष्यों ने पहली बार उनमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर को देखा। जब वे मृतकों में से जी उठे वे निश्चयपूर्वक स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु की भांति महीमान्वित हुए। वे न केवल गरजते हुए समद्र को बल्कि दिल के संघर्षों को शांति में बदल सकते हैं जो हमारी समझ से परे है। केवल वे जो उन पर विश्वास करते हैं वही केवल उस नये जन्में बालक के आलौकिक होने और दिव्य शक्ति होने पर विश्वास करते हैं। संसार और यहां के दार्शनिक, शान्ति की खोज कर रहे हैं। यहां शान्ति का राजकुमार आया है जो मनाव स्वभाव को स्पर्श कर सकता है और उसे दैविक स्वभाव में बदल सकता है। मानव जाति का पाप क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया गया है और जी उठने की शक्ति के द्वारा मृत्यु और कब्र की शक्ति को निरस्त कर दिया है।

'मैं उन्हें अधोलोक के हाथ से छुड़ा लूंगा , मैं उन्हें मृत्यु से छुटकारा दूंगा। हे मृत्यु, तेरे मारने की शक्ति कहां रही? हे अधोलोक, तेरा डंक कहां ? मेरी दृष्टि से करूणा ओझल हो जाएगी। (होशे 13:14)

केवल वही लोग जो आत्मा में जन्में हैं, वही प्रभु के जन्म की घटना के महत्व को समझ सकते हैं। सारी सृष्टि के राजा को एक पुत्र जन्मा है। हमारी तरह ही उसकी परीक्षा हुई पर उन्होंने हमेशा पाप के ऊपर विजय पाई। 'क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमसे सहानुभूति न रख सके। वह तो सब बातों में हमारे ही समान परखा गया , फिर भी निष्पाप निकला। (इब्रानियों 4:15) उसने इस विशेषाधिकार को सिद्ध किया जो पहले आदम को दिया गया कि बुराई पर विजय हांसिल करे। हर प्रकार की परीक्षा होने के बावजूद वे बिना पाप के रहे। मानव जाति के पाप को अपने ऊपर लिया। वे इसे कब्र में ले गये और वहां गाड़ दिया। और उन्होंने अपने आप को राजा साबित किया। प्रकृति ने भी इसे मान लिया। धरती भी कांप उठी और सूर्य भी अंधकारमय हो गया। जब वे क्रूस पर चढ़ाये गये। कब्र ने कुछ संतों को मुक्त कर दिया वे लोगों को दिखाई दिये। वे पृथ्वी पर एक राजा की तरह चले। मृत्यु ने आत्मसमर्पण कर दिया , मुर्दे जी उठे। कब्र ने लाजर को दे दिया जब उसे पुकारा गया , 'हे लाजर, निकल आ। ' लाजर एक जीवित होकर निकल आया। और

सबसे बढ़कर यह कि कई पापी पुरूष और स्त्रियां जो पाप में मरे हुए थे उनका मन परिवर्त्तन हुआ। कुछ स्थानों में जैसे सूखार की सामरी स्त्री मिशनरी बन गई। वे राजा बने जो मानव के भ्रष्ट स्वभाव को बदल कर उसे उसके मूल स्थिति में पहुंचा दिया। यीशु का नाम अधोलोक को कंपा देता है। शैतान और उसके दूतों ने संसार को बुरी तरह से प्रभावित किया है मानव के दिमाग को कुतर्कपूर्ण और बहकाने वाले दर्शन से भर दिया है। मानव ने उद्धार के मार्ग को खो दिया है। जब मानव ने मूर्तिपूजा करनी शुरू की , ये बुरी अशुद्ध आत्माएँ मूर्ति में प्रवेश करतीं हैं और सृष्टि में पुरुषों और स्त्रियों को भ्रमित करतीं हैं और सत्य को जानने से इंकार करवाती है। यह मूर्तिपूजा भ्रष्ट मानव का स्वभाव बिगाड़ देती है। उनके कहे जाने वाले अवतार लोगों की कल्पना मात्र हैं। लोग इन अवतारों में पापमय जीवन को पाते हैं। पर इस यीशु में दो हजार वर्ष बीत जाने पर भी उनकी हम निष्पाप ही पाते हैं और कोई भी उनमें किसी प्रकार की अशुद्धता, पाप और स्वार्थीपन को उनके मत्थे पर नहीं मढ़ सकता है। वह देवता हैं जिन्होंने हमारी बिमारी और दुख को अपने ऊपर ले लिया। हमारी बिमारियां और दुख उनमें घाव उत्पन्न किये फिर भी उन्होंने सहर्ष अपना जीवन मानव जाति के लिए दे दिया। यीशु अपने चरित्र के गुणों के कारण पृथ्वी और स्वर्ग में सर्वोच्च सिद्ध हुए। कोई भी उन्हें राजगद्दी से उतार नहीं सकता है और जो इस महान उद्धारकर्ता का अनुगमन करते हैं वे इस सर्वोच्चता के हिस्सेदार हो जाते हैं। वे सर्वोच्च होते हैं न कि किसी मानव की सहायता से , न ही देशभक्ति की भावना से बल्कि शुद्ध गुणों से जो मानवता के सबसे ऊंची जगह से मिलती है। कब्र का उस पर कोई अधिकार नहीं है। उनमें मृत्यु का भय नहीं है - यीशु मसीह हर एक भय को शान्त कर देता है। वे तारे की तरह होंगे जो परमेश्वर के राज्य में आकाश की तरह चमकेंगे।

'उसकी प्रभुता की बढ़ती का और उसकी शांति का अंत न होगा। वह दाऊद की राजगद्दी और उसके राज्य को उस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धार्मिकता के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन इसे पूरा करेगी। ' (यशायाह 9 :7) 'तब यिशै के ठूंठ में से एक अंकुर फूट निकलेगा, हां, उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर फलवन्त होगी। तब यहोवा का आत्मा, बुद्धि और समझ का आत्मा , युक्ति और पराक्रम का आत्मा वरन् ज्ञान और यहोवा के भय का आत्मा उस पर छाया रहेगा।' वह अब्रहम के परिवार से आयेगा। परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि संसार के सभी राष्ट्र उसके द्वारा आशिष पायेंगे। यह प्रतिज्ञा पूरी हुई। 'वह न तो मुंह देखा न्याय करेगा और न कानों से सुनकर निर्णय लेगा।' संसार के सभी दार्शनिक यीशु के सामने बौने दिखते हैं। यीशु जो प्रचार करते थे उसे जीते थे। उनका दर्शन उनके पवित्र जीवन से प्रगट होता है। संसार चाहता है कि दर्शन साकार रूप में प्रगट हो और वही ख्रीष्ट के व्यक्तित्व से हमें देखने को मिला। मानवीय शरीर में परमेश्वर का स्वरूप हम अपने में देख सकते हैं। हम क्रूस पर यीशु का विर्दीण और लहू बहते हुए हृदय को देख सकते है जो हृदय-मानव के पाप के कारण तोड़ा गया। अंत में हम यीशु ख्रीष्ट को सभी राज्यों और शक्तियों के ऊपर स्वर्ग पर विराजमान देखते हैं। उनके अधिकार पर कोई सवाल नहीं उठा सकता। क्या यह महान और अद्वितीय उद्धारकर्ता हमारे सारे अस्तित्व का निर्विवाद या मान्य प्रभु है?

- श्रीमान एन. दानियेल।

सत्य की परख!

"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं - वे न तो लहू से , न शरीर की इच्छा से, और न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। " (यूहन्ना 1:12-13)

शैतान द्वारा नाशकर त्यागों को भी यीशु मसीह ग्रहण करते है

बाइबल कहता है कि शरीर के अनुसार तुम में से न तो बहुत से बुद्धिमान, न बहुत शक्तिमान और न बहुत कुलीन बुलाए गए। परमेश्वर चाहते है कि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करे। अठारहवीं सदी की एक कुलीन महिला जिसकी यीशु मसीह के सुसमाचार प्रचार करने की बुलाहट आई थी , वह हन्टिंगडन के काउन्टिस, सेलीना थी। वह कृतज्ञता से भरी थी कि बाइबल में बुलाए गए लोगों के बारे में 'न कोई है जो' नहीं लिखा गया है बल्कि 'न बहुत हैं जो' लिखा गया है।

लेडी हन्टिंगडन चाहती थी कि उद्धार जो यीशु मसीह देते है , बहुत से लोग पाएँ। रविवार शाम को कई प्रचारक उनके घर में आकर संदेश देते थे। एक सोमवार के दिन , दो महिलाओं ने उनके यहाँ आकर, प्रसिद्ध प्रचारक जॉर्ज ह्विटफील्ड के बारे में लेखा दिया था। 'ओह मेरी मालकिन ,' उनसे कहा गया, 'उन सभी प्रचारकों में से, जो हम सुन चुके है यह सबसे विचित्र और अबोध्य है। वह प्रकट कर रहे थे कि यीशु मसीह पापियों को ग्रहण करने के लिए , बहुत इच्छुक है। शैतान द्वारा नाश किए लोगों को भी ग्रहण करने उन्हें कोई एतराज नहीं है। अब साहिबा, जन्म से लेकर क्या आपने कभी ऐसी बात सुनी है?'

लेडी हन्टिंगड़न समझ गई कि इस तरह के न्यौते में ज़रूर कुछ असाधारण बात है। जब ह्विटफील्ड उस वक्त घर पर ही थे, तो उन्हीं को इस बात का विवरण देने दिया।

'लोग कह रहें है ,' लेडी हन्टिंगड़न ने अवगत कराया, 'कि --- आप ने इन शब्दों में अपने आपको व्यक्त किया था- 'पापियों का ग्रहण करने के लिए यीशु मसीह इतना तैयार है कि वे शैतान द्वारा त्याज्यी लोगों को भी स्वीकार करने इच्छुक है।' '

'क्या मैं ने सही कहा या गलत आप ही इस ब्योरे से तय कीजिए।' ह्विटफील्ड़ ने कहा।

उन्होंने आगे कहा , 'आधे घंटे पहले, क्या आपने दरवाजे पर धीमी खटखट सुनी थी?' वह वृद्ध, गरीब और दीन दिखनेवाली एक महिला थी जिसने मुझ से बात करने की विनती की। उसे बैठक के कमरे में बिठाने के बाद , उन्होंने मुझ से इस तरह बातचीत की - 'श्रीमान मुझे पता चला कि किसी गिरजाघर में कल रात आपने प्रचार किया है?' 'हां मैंने किया है।'

'हां श्रीमान!' उस औरत ने कहा, 'आदतन कल मैं उस गिरजाघर के सामने से गुजर रही थी। और मैंने किसी प्रचारक की आवाज सुनी। मैंने पहले ऐसा कभी नहीं किया था - मैं अंदर चली गयी थी। आपने जो कहा , उन में से पहली बातों में से एक यह है कि पापियों को ग्रहण करने के लिए यीशु मसीह तैयार है। और वे शैतान-त्याजों का भी तिरस्कार नहीं करेंगे। अब श्रीमान , मैं इस कस्बे में कई सालों से रही हूँ। मैं सोचती हूं कि यह सच है कि मैं उन शैतान-ज्याज्यों में से एक हूँ और शैतान की सेवा करते मैं अपने आपको लुटा चुकी हूँ। क्या आप सोचतें है, श्रीमान कि यीशु मसीह मुझे ग्रहण करेंगे ?' व्हिटफील्ड ने आगे कहा , 'मैंने उसे आश्वासन दिया कि इस बात में कोई शंका नहीं हैं, अगर वो उनके पास जाने के लिए तैयार है तो।'

वह बेचारी बचाई गयी , हालांकि उसके पाप करमिजी लाल रंग सा था , मगर मसीह के लहू ने उसे धोकर हिम के समान श्वेत बनाया। यीशु मसीह ने 'परमेश्वर की संतान' बनने का सामर्थ उसे दिया।

- देखें, जे.एफ फॉस्टर द्वारा लिखित 'दा लाइफ एन्ड टाइम्स आफ सेलिना , काऊन्टेस आफ हन्टिंगड़न'।

परमेश्वर का विश्वसनीय प्रावधान

सन् 1885 का शीत काल था। अयोआ राज्य में , नवंबर महीने के आरंभ में ही हिमपात हुआ था। दो फुट तक बर्फ जमा हो गई थी। वह तुफान ऐसा भंयकर था कि न तो जानवर और न ही लोग उसमें चल पाते। अपने रिश्तेदारों से छ : मील की दूरी पर लकड़ी के बने एक कमरे में औरत रह रही थी। उसके पांच बच्चे थे जो एक साल से लेकर ग्यारह साल तक की उम्र के थे।

जब हिमपात शुरू हुआ था, उसके घर में खाने और इंधन का राशन कम था। दिन ब दिन वो भी घटता गया। चौथे दिन जो बचा था, उसे पकाकर खाया। एक और दिन निकालने लायक इंधन बचा था। उस रात अपने नियमानुसार उसने अपने बच्चों को पवित्र वचन (बाईबल) पढ़कर

सुनने के लिए अपने पास बुलाया। और उनको स्वर्गीय पिता की संभाल में सौंप दिया। तब प्रार्थना के लिए झुक कर , वैसे ही विनती की जैसे कोई इस तरह की स्थिति में करेगा कि परमेश्वर उनके लिए कुछ मदद भेज दें।

जब वह प्रार्थना द्वंद में लगी थी , पवित्र आत्मा ने भजनकार के इन शब्दों की छाप उसके दिल पर लगायी। 'मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ , परन्तु मैंने न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ और न कभी उसके वंश को भीख मांगते देखा है।' और फिर यह शब्द सुनाई पड़ा जो मानो कोई बोल रहा हो: 'जवान सिहों को तो घटी होती है , और वे भूखे भी रह जाते हैं , परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भली वस्तु की घटी न होगी। ' उस औरत ने परमेश्वर के दिए इस वचन पर विश्वास किया ; और इस वादे के पूरे होने के आश्वासन के साथ परमेश्वर से प्रार्थना की। न तो अगले दिन की चिंता या भय के बिना वह सो गई।

जब सुबह हुई , माँ उठ गई। खाने के सामान के खत्म होने से पहले रोज़ान की तरह उसने आग जला कर चाय की केतली चूल्हे पर रख दी। जब की सूर्योदय हो ही रहा था , एक आदमी स्लेज पर सवार उसके घर आया। उसने तेजी से आकर उनका हाल-चाल पूछने लगा। उस औरत का दिल भर आया, बोलने को हुआ। मगर जल्दी ही उसने अपनी कमी के बारे में बताया। और किस तरह उसने मदद के लिए परमेश्वर को पुकारा था। उस आदमी ने उत्तर दियाः 'पिछली रात लगभग नौ बजे मैं और मेरी पत्नी पर यह एहसास उतरा कि आप लोग बहुत जरूरत में हो। सारी रात सोये बिना बहुत सुबह ही , इस विषय पर ध्यान दे मैं जल्दी यहाँ चला आया।

फिर स्लेज के पास जाकर रोटी, मास और सब्जी की सामिग्री वह, घर के अंदर लाकर रख दी। उस औरत के नन्हें बच्चे जो पिछले रात ही, बची-खुची रोटी खाकर सोये थे , अब उनको नश्ता खिलाने के लिए उस मां के पास भरपूर राशन था। उपर्युक्त कथन को मानो - निर्विवाद ही परमेश्वर का पूर्व प्रबन्ध को और खास बनाने, वह आदमी उस परिवार की परिस्थितियों और पास-पड़ोस से बिलकुल अपरिचित था। जब की वह मां परमेश्वर को पुकार रही थी उसी वक्त उस आदमी को यह एहसास हुआ। सचमुच वह आदमी इस से पहले उस घर में कभी आया नही था और न ही इस से पहले उस औरत की हालत में कभी रुचि दिखाई थी। मगर बाद में वह वास्तव में ही एक मित्र साबित हुआ।

उस वक्त , परमेश्वर पर भरोसे की परख हुई। फिर भी वह विश्वास विजयी हुआ। यह कहानी सन् 1885 की है। मगर संसार के इतिहास में परमेश्वर का पूर्वप्रबन्ध हर रोज साबित किया जा रहा है।

एस.बी.षा द्वारा लिखित 'टच्चिंग इन्सीडेंट्स एन्ड रिमार्कबल एन्सर्स टू प्रेयर' से चुनीहुई।

उनका जन्म, हमारा नया जन्म

'देखों, एक कुंवारी गर्भवती होगी, वह एक पुत्र को जन्म देगी , और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ।' (यशायाह 7:14)

इतिहास में उनका जन्मः

'इसी कारण वह पवित्र पुत्र जो उत्पन्न होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।' लूका (1 :35) यीशु मसीह इस दुनिया 'में' जन्मे; इस दुनिया 'से' नहीं जन्मे। वह इतिहास से नहीं जन्में, बल्कि उन्होंने बाहर से आकर इतिहास में कदम रखा। यीशु मसीह एक अति उत्तम मनुष्य नही; वह ऐसा अस्तित्व है जिन्हें मानव जाति उनको अपने साथ मिलाकर उनका लेखा नहीं दे सकती। यीशु मसीह परमेश्वर बनने वाला आदमी नहीं, मगर मनुष्यों में अवतार लिया परमेश्वर है। बाहर से, मनुष्य के देह में आनेवाला , देहधारी परमेश्वर यीशु है। उनका जीवन सर्वोत्तम है। अति-पवित्र (उच्चत्तम) का एक विनीत (निम्नत्तम) द्वार से प्रवेश करना है। हमारे प्रभु का जन्म पुनरागमन है।

मुझे में उनका जन्मः

जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए , मैं तुम्हारे लिए प्रसव की सी पीड़ा में हूँ। (गलातियों 4:19) जैसे की हमारे प्रभु मानव इतिहास में बाहर से आये, वैसे ही उनका बाहर से हमारे अंदर आना ज़रूरी है। क्या परमेश्वर के पुत्र के लिए मैंने अपने व्यक्तिगत मानव जीवन को

'बैतलहम' बनने दिया है ? जब तक न मैं पुनः जन्म (आत्मा में जन्म) न लूं, ऐसा जन्म जो स्वर्ग से है और सहज जन्म से बिल्कुल अलग है - तब तक मैं परमेश्वर के राज्य की सीमा में प्रवेश नहीं कर पाऊँगा। 'तुम्हें नया जन्म लेना होगा।' यह एक आज्ञा नहीं , नीव संबधित सत्य है। नये जन्म की विषेशता यह है कि मैं परमेश्वर को अपना समर्पण इस तरह करता हूँ कि मुझ में मसीह का रूप बन जाए। ऐसा समर्पण करते ही तुरन्त मुझ में मसीह का रूप बन जाता है। उनका स्वभाव मेरे अन्दर काम करने लग जायेगा।

परमेश्वर का देह धारण करना - यानी मसीह का रूप हममें बनना , मसीह द्वारा प्राप्त विमोचन के कारण , यह मेरे और आप के लिए गंभीर रूप से संभव बन गया है।

- ओसवाल्ड चेम्बर्स।